9 वर्ष से 11 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेज़ी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रहा है।

ISBN 978-81-237-7394-0
पहला संस्करण : 2015
पहली आवृत्ति : 2017 (*शक 1939*)

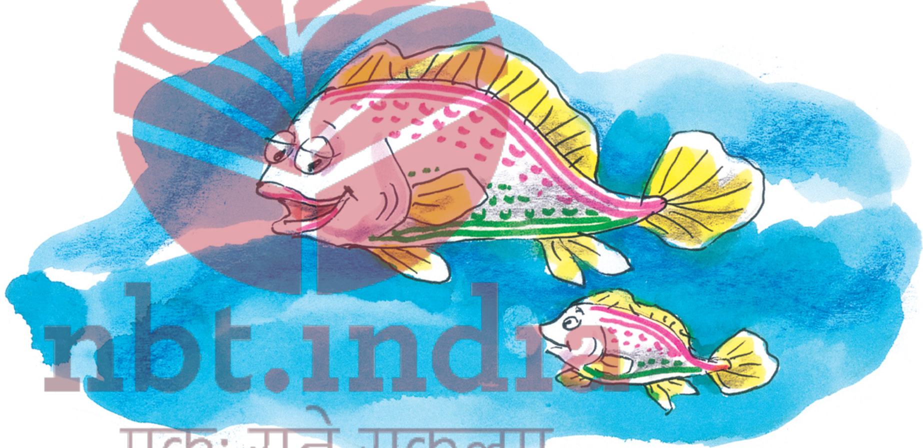
Sapana Ek Machhali Ka *(Hindi Original)*
₹ 40.00
निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

सपना एक मछली का

जैबुन्निसा हया

चित्र : नीता गंगोपाध्याय



nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA





एक दिन की बात है। समुद्र के किनारे ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। वहीं पास में बिखरी रेत पर रंग-बिरंगी सीपियाँ पड़ी थीं। किनारे पर एक नन्ही मछली आई, और वहाँ रेत पर पड़े सीप से बोली, “क्या तुम मुझे अपने भीतर रखा मोती दे सकती हो?”

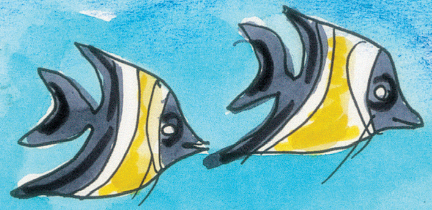
मछली की बात सुनकर सीप गुस्से में बोली, “क्यों दे दूँ तुम्हें मोती? इतना भी नहीं जानती, मोती का घर सीप होता है?”

सीप की बात सुनकर मछली की आँखों में आँसू आ गए। रोते हुए वह सीप से बोली, “अगर तुम मुझे मोती दे देती तो मैं उसकी माला बनाकर पहनती!”

मछली की ऐसी भोली बात सुनकर सीप हँस पड़ी और फिर उससे बोली, “चलो मान लो, एक पल के लिए मैंने तुम्हें मोती दे भी दिया तो अब ये बताओ, माला बिना धागे के केसे बनेगी?”

इस पर मछली बोली, “मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देते-देते तंग आ गई हूँ। लेकिन अब तुम जानना ही चाहती हो कि मैं माला कैसे बनाऊँगी, तो सुनो! जब कोई मछुआरा समुद्र में जाल डालता है तब हम उस जाल का धागा काट लेते हैं।”

नन्ही मछली की बात सुनकर सीप बोली, “चोरी करती हो? हाय, कितने दुख की बात है!”

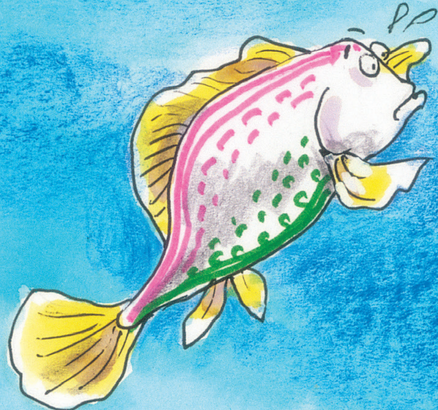


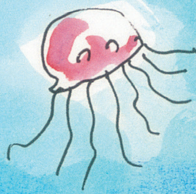
सीप की यह बात सुनते ही नन्ही मछली वापस समुद्र में लौट गई। उसे दुखी देखकर उसकी माँ ने पूछा, “क्या बात है हरीम? क्यों मुँह लटकाए बैठी हो?”

अपनी माँ की बात सुनकर हरीम मछली की तो रुलाई फूट गई। सिसकते हुए बोली, “एक सीप ने हमें चोर कहा!” यह कहते हुए उसने सारी बात अपनी माँ को बता दी।

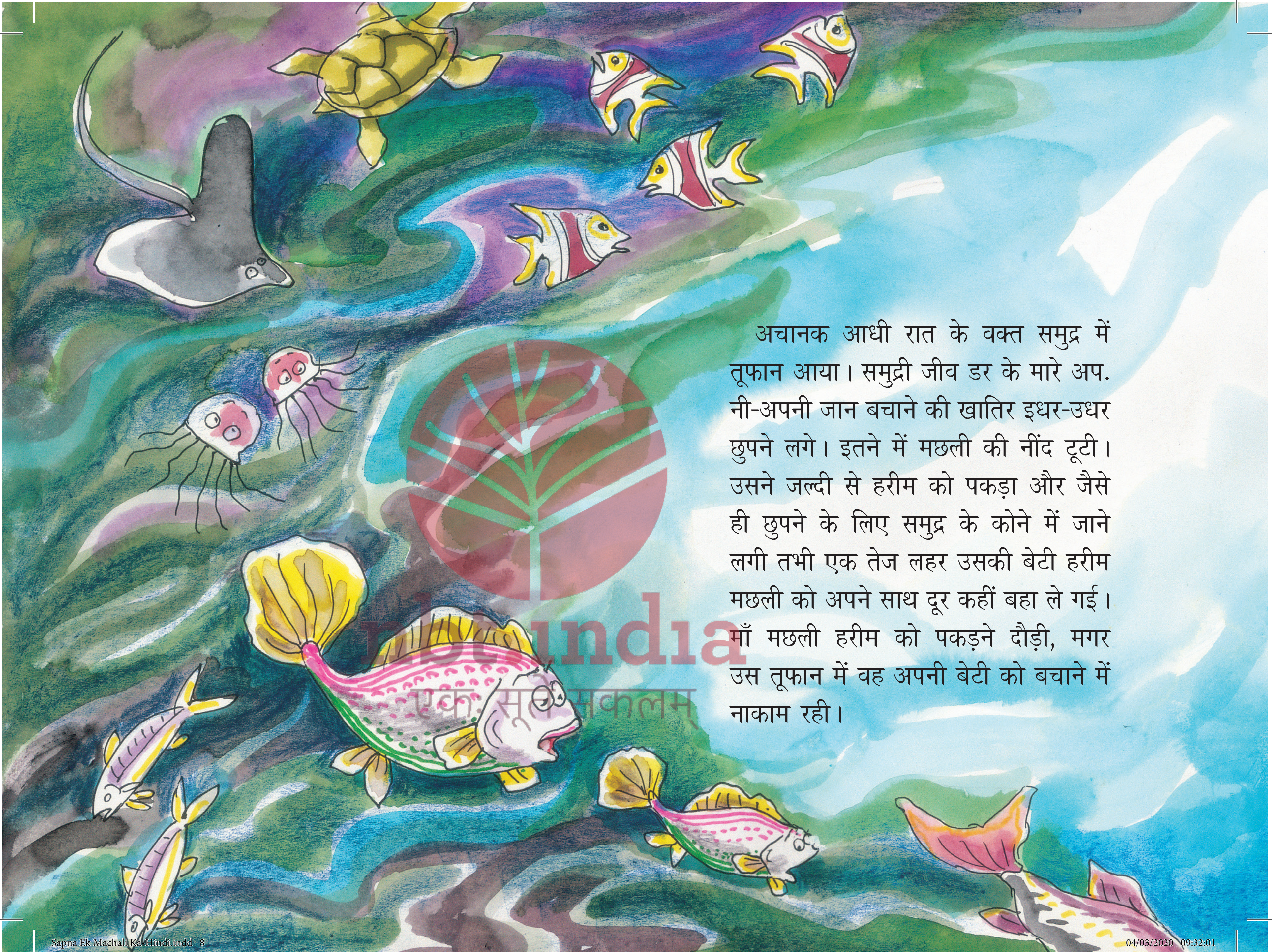
हरीम मछली की बात सुनकर उसकी माँ बोली, “सीप ने जो कुछ कहा, सही कहा। हमलोग मछुआरों का जाल चुपके से ही तो काटते हैं! सही मायनों में देखा जाए तो यह एक तरह की चोरी ही है कि किसी की बिना आज्ञा के उसकी चीज ले लो। अच्छा चलो, अब ये रोना-धोना छोड़ो। जो हुआ उसे भूल जाओ।”

और अब वे दोनों मछलियाँ समुद्र की निचली सतह में जाकर सो गईं।









अचानक आधी रात के वक्त समुद्र में तूफान आया। समुद्री जीव डर के मारे अपनी-अपनी जान बचाने की खातिर इधर-उधर छुपने लगे। इतने में मछली की नींद टूटी। उसने जल्दी से हरीम को पकड़ा और जैसे ही छुपने के लिए समुद्र के कोने में जाने लगी तभी एक तेज लहर उसकी बेटी हरीम मछली को अपने साथ दूर कहीं बहा ले गई। माँ मछली हरीम को पकड़ने दौड़ी, मगर उस तूफान में वह अपनी बेटी को बचाने में नाकाम रही।

कुछ देर बाद तूफान थमा। हरीम मछली की माँ रोने लगी। आसपास की मछलियों ने पूछा, “तुम क्यों रो रही हो?” इस पर मछली बोली, “तूफानी लहरें न जाने कहाँ मेरी बच्ची को अपने साथ बहा ले गईं। पता नहीं, वह जिंदा भी होगी कि नहीं!” यह कहकर वह रो पड़ी।



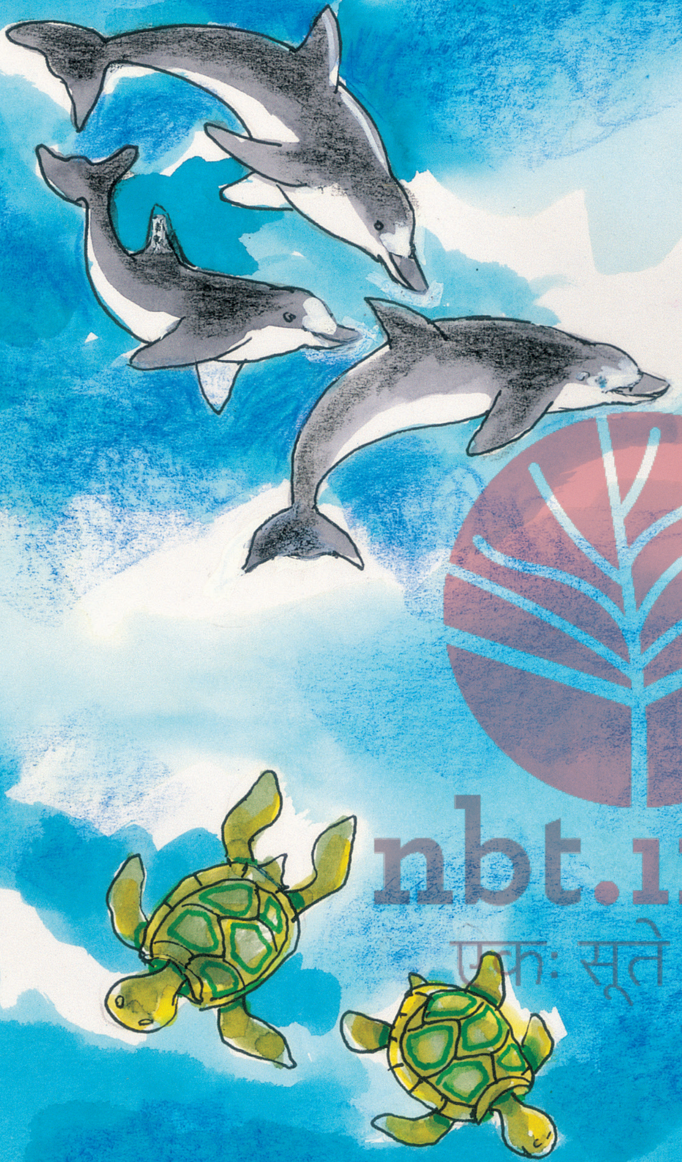
अगली सुबह माँ मछली हरीम को ढूँढ़ने निकली। उसने सारा समुद्र छान मारा, मगर हरीम का कहीं पता न चला।

रात हुई तो वह दुखी मन से एक कोने में बैठ गई। बैठे-बैठे न जाने कब उसकी आँख लग गई और फिर उसने एक सपना देखा—वह एक बहुत बड़े समुद्री जहाज के अंदर जाल में कैद है। वह जहाज तेजी से पानी को चीरता हुआ आगे बढ़ा जा रहा है। तभी अचानक जहाज एक विशालकाय पत्थर से जा टकराया। टकराते ही उसमें से धुआँ उठने लगा। जहाज से चीख-पुकार की आवाजें आने लगीं। धीरे-धीरे वह डूबने लगा। तभी एक तेज लहर उठी और उस लहर के साथ हरीम मछली जहाज के भीतर आ गिरी। माँ को जहाज के अंदर देखकर बोली—'देखो माँ, मैं आ गई!'

'हरीम, मेरी बेटी!' यह कहते हुए एक झटके के साथ मछली की आँख खुल गई और उसका सपना टूट गया। वह मन-ही-मन सोचने लगी, 'काश, आज जो सपना मैंने देखा वह सच हो जाए!'







अगले दिन खिली धूप का आनंद लेने सभी छोटे-बड़े जीव-जंतु पानी के ऊपर कुलाँचें भरते हुए इधर-से-उधर उछल-कूद मचा रहे थे। तभी उनमें से एक बड़ी मछली हरीम की माँ से बोली, “अरे, तुम भी आओ न हमारे साथ! कब तक यूँ ही भूखी बैठी रहोगी?”

उस मछली की बात सुनकर हरीम की माँ बोली, “कल तक तो मैं हरीम के न मिलने की वजह से दुखी थी। सोचा, अगर वह नहीं मिली तो मैं यूँ ही दम तोड़ दूँगी। मगर कल रात जो मैंने सपना देखा, उससे मेरे मन में एक नई आशा जगी है, क्योंकि कभी-कभी सपने भी ईश्वर का संदेश हुआ करते हैं।”

हरीम की माँ की बात सुनकर सब मछलियाँ एक साथ बोलीं, “क्या हमें नहीं बताओगी अपना सपना?”

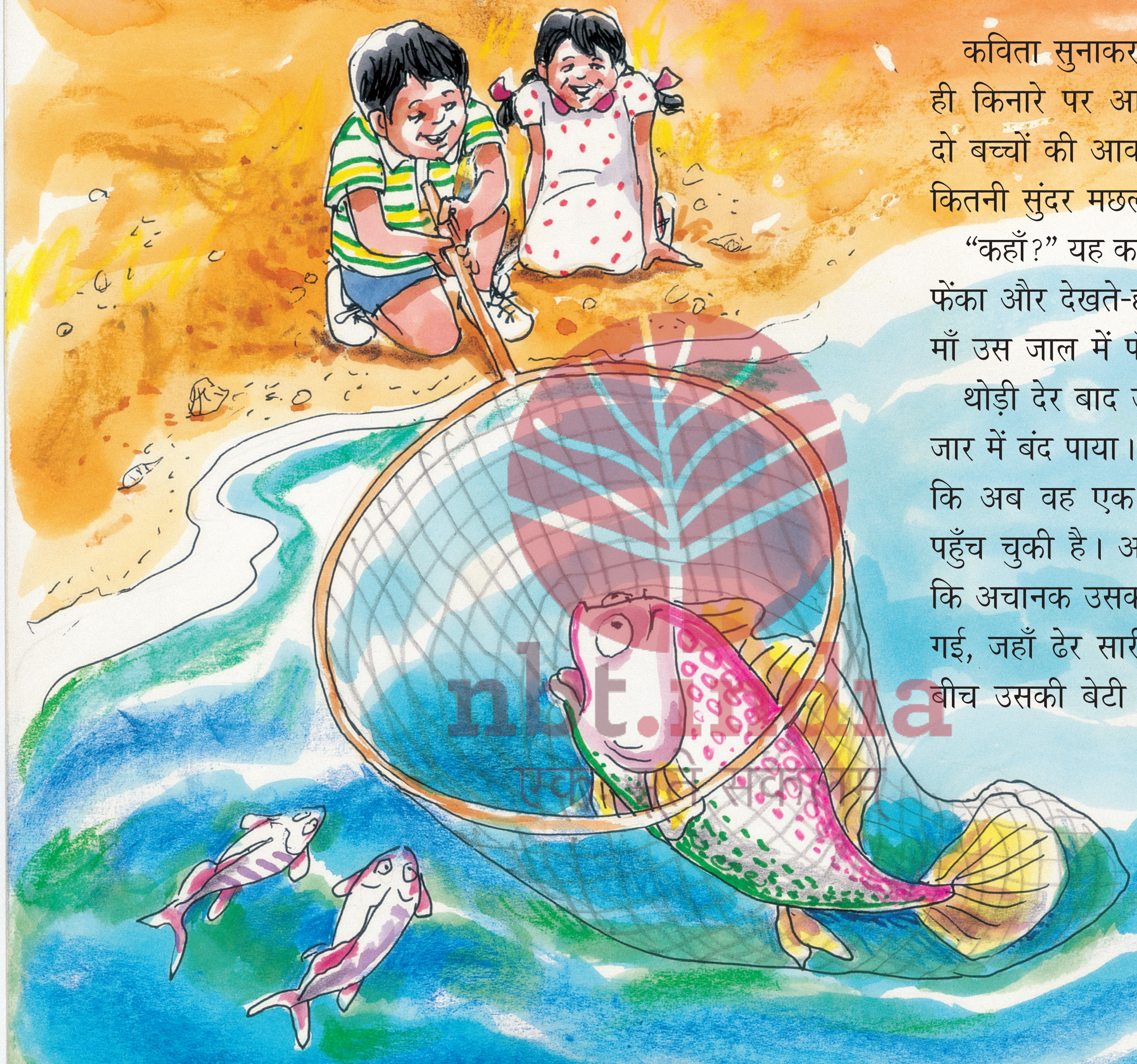
इस पर मछली हँसती हुए बोली,

“मैं सोई जो एक शब* तो देखा यह ख्वाब
बढ़ा और जिससे मेरा इजतिराब*
यह देखा कि मैं जा रही हूँ कहीं
अँधेरा है और राह मिलती नहीं
लरजता था डर से मेरा बाल-बाल।”



* रात

* बेचैनी



कविता सुनाकर मछली मन बहलाने जैसे ही किनारे पर आई, तभी उसके कानों से दो बच्चों की आवाज टकराई, "मानू, देखो, कितनी सुंदर मछली!"

"कहाँ?" यह कहते हुए दूसरे बच्चे ने जाल फेंका और देखते-ही-देखते हरीम मछली की माँ उस जाल में फँस गई।

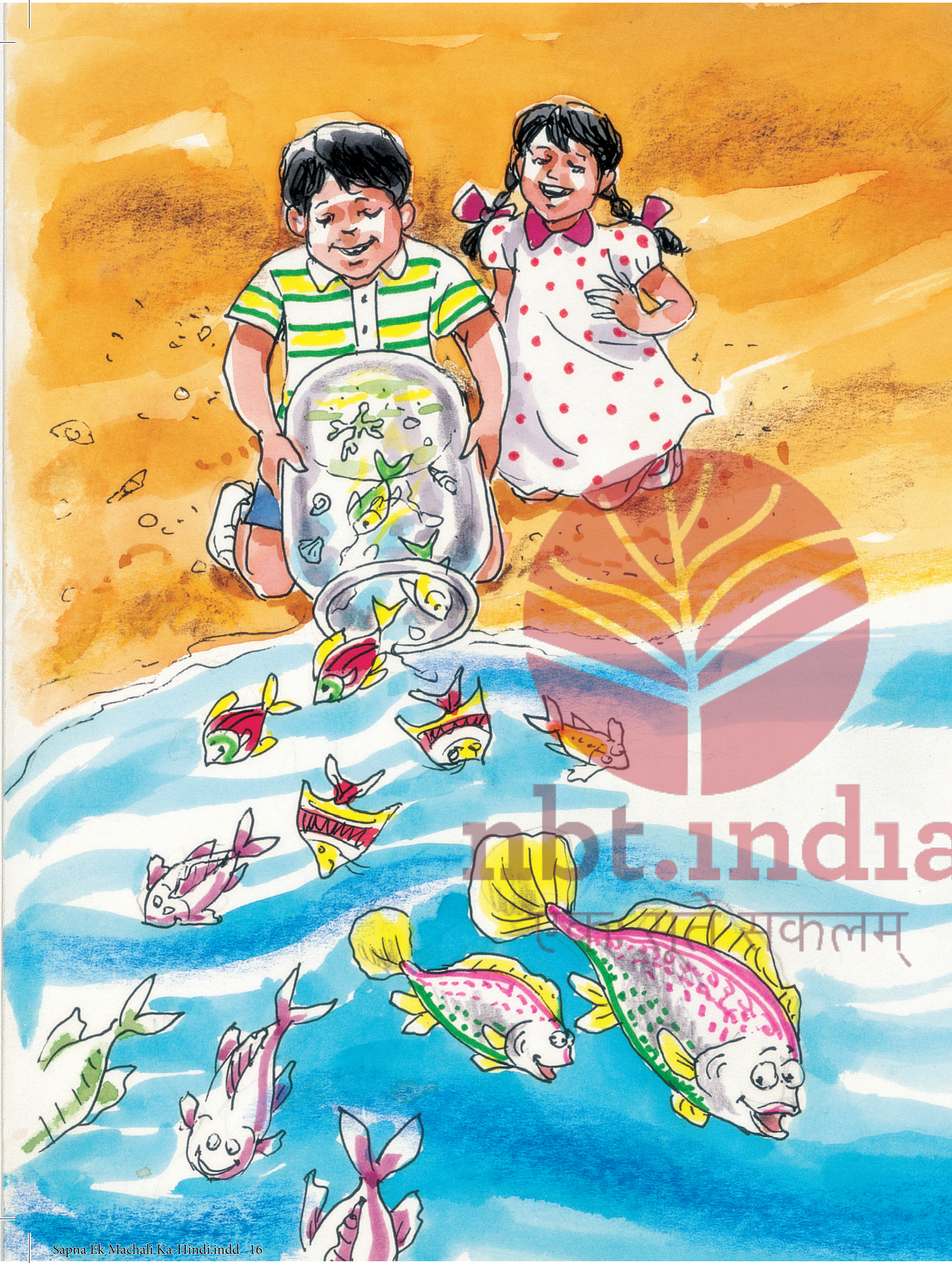
थोड़ी देर बाद उसने खुद को एक बड़े-से जार में बंद पाया। उसने जार के बाहर देखा कि अब वह एक बड़े-से मकान के भीतर पहुँच चुकी है। अभी वह सोच ही रही थी कि अचानक उसकी निगाह जार के कोने में गई, जहाँ ढेर सारी रंग-बिरंगी मछलियों के बीच उसकी बेटी हरीम भी थी। हरीम को



देखकर वह खुशी से उछल पड़ी, "हरीम, मेरी बच्ची, तुम यहाँ हो? मैंने तुम्हें कहाँ-कहाँ नहीं ढूँढ़ा!"

यह कहते हुए वह हरीम की तरफ बढ़ी और फिर दोनों बिछड़ी माँ-बेटी देर तक आँसू बहाती रही। कुछ देर बाद जब उनका मन शांत हुआ तो हरीम अपनी माँ से बोली, "ऐ माँ, जबसे मैं तुमसे बिछड़ी तबसे मैं चैन से कभी सो नहीं पाई। रह-रहकर तेरी जुदाई का दर्द मुझे तड़पाता रहा, आठों पहर मुझे तुमसे बिछड़ने का गम रुलाता रहा।"

यह कहकर हरीम सुबक पड़ी, तो माँ मछली बोली, "जो हुआ, उसे भूल जाओ बेटी!"



अभी वह हरीम से कह ही रही थी कि अचानक उसे किसी के कदमों की आहट सुनाई दी। उसने मुड़कर देखा, वही लड़का जो उसे पकड़कर यहाँ तक लाया था, उससे कह रहा था–"मैंने तुम्हारा दुख जान लिया है, इसलिए आज ही मैं तुम सब मछलियों को आजाद कर दूँगा।"

कहते हुए मानू ने जार उठाया और समुद्र में ले जाकर पलट दिया। मछलियाँ कैद से आजाद होते ही समुद्र में मारे खुशी के उछलने-कूदने लगीं।

रात हुई तो हरीम की माँ समुद्र के किनारे पर आई और आसमान की तरफ देखकर बोली, "हे ईश्वर, उस दिन जो मैंने सपना देखा था कि मैं पानी के जहाज के भीतर एक जाल में कैद हूँ वह आज सच हो गया, क्योंकि तूने मुझे बता दिया था कि एक दिन मैं ऐसे ही कैद होऊँगी। और फिर मुझे मेरी खोई हुई बेटी हरीम मिल जाएगी।"

यह बुदबुदाते हुए वह मुस्कुरा उठी। तभी पीछे से हरीम की आवाज ने उसे चौंकाया। उसने मुड़कर देखा तो हरीम उससे कह रही थी, "माँ, पता नहीं क्यों, रह-रहकर मुझे एक बात याद आ रही है।"

मछली चौंककर बोली, "क्या?"



इस पर हरीम बोली, “भूल गई? एक दिन तुम्हीं ने तो मुझे बताया था, मनुष्य दयावान होते हैं; अब जैसे वह लड़का, जिसने हमें दोबारा समुद्र में लाकर छोड़ा।”

हरीम की बात सुनकर मछली कुछ सोचते हुए बोली, “हाँ, सब याद आ गया, और इसी के साथ आज मैं तुम्हें एक सच और बता दूँ, वह यह...”

यह कहते हुए मछली बोली, “जुगनू तभी तक चमकता है, जब तक उड़ता है। यही हाल मन का है। जब हम रुक जाते हैं तो अंधकार में पड़ जाते हैं।”

यह कहकर माँ मछली ने अपनी प्यारी हरीम को गले से लगा लिया और देर तक उससे लिपटी रही।



जैबुन्निसा हया : विगत दस वर्षों से पत्रकारिता से जुड़ी लेखिका की बालोपयोगी एवं नवसाक्षरोपयोगी दसेक पुस्तकें प्रकाशित हैं। पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर लेखन। आकाशवाणी में फ्री लांस ब्रॉडकास्टर हैं, साथ ही दूरदर्शन से भी जुड़ाव। हिंदी अकादमी से बाल किशोर साहित्य सम्मान प्राप्त।

नीता गंगोपाध्याय : दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट से मास्टर ऑफ फाइन आर्ट्स (एमएफए) में डिग्री प्राप्त चित्रकार वर्तमान में सरकारी एवं गैर-सरकारी प्रकाशन संस्थानों से प्रकाशित पाठ्य एवं पाठ्येतर पुस्तकों के लिए चित्रकारी कार्य से जुड़ी हैं।

एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (यू.पी.) द्वारा मुद्रित



nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

₹ 40.00
ISBN 812377394-3
9 788123 773940
17180000

सपना एक मछली का

जैबुन्निसा हया

चित्र : नीता गंगोपाध्याय

